DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-3 ,UNIT-5,
OBESSIVE- COMPULSIVE DISORDER OR OCD
LECTURE-46

मनोग्रस्ति-बाध्यता विकृति :स्वरूप एवं प्रारूप

OBESSIVE-COMPULSIVE DISORDER OR OCD:NATURE & FORMS

शुरुआत में नैदानिक मनोवैज्ञानिकों तथा मनश्चिकित्सकों का विचार था की मनोग्रस्तता तथा बाध्यता दो स्वतंत्र रोग है | परन्तु बाद के अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया की ये दोनों स्वतंत्र रोग नहीं है बल्कि एक ही विकृति के दो पहलू है | रोगी में कभी एक पहलू प्रधान होता है तो कभी दूसरा पहलू प्रधान होता है और कभी-कभी यह देखा गया है की ये दोनों पहलू एक ही रोगी में संतुलित रूप से सामान मात्रा में दिखाई देते है |अतः इस रोगी के दोनों पहलुओं को समझने के लिए हम इसका वर्णन अलग-अलग निम्नांकित ढंग से करेंगे –

मनोग्रस्तता (OBESSION)-मनोग्रस्तता एक ऐसी अवस्था होती है जिसमे रोगी बार बार किसी अतार्किक एवं असंगत विचारों को न चाहते हुए भी मन में दोहराते रहता है| रोगी ऐसे विचारों के अर्थहीनता ,असंगतता एवं अतार्किक स्वरूप को भलीभांति समझता है और उससे छुटाकारा भी पाना चाहता है परन्तु वह लाचार रहता है और विचार बार-बार उसके मन में आकर उसमे मानसिक अशांति उत्पन्न करते रहता है |

किस्कर (1985) के अनुसार "मनोग्रस्तता एक ऐसा विचार या चिंतन है जो हास्यापद ,बेतुका तथा अस्पष्टतः अर्थ हीन होता है फिर भी ऐसा होता है जिससे रोगी छुटकारा नही पा सकता है"| सेलिगमैन एवं रोजेनहान (1998) के अनुसार "मनोग्रस्तता ऐसे पुनरावर्ती चिंतन,प्रतिभाव एवं आवेगों को कहा जाता है जो चेतन में प्रवेश करते है और प्रायः घृणित होते है और उनको नियंत्रित करना या समाप्त करना कठिन होता है |"

डेविसन एवं नील (1996) के अनुसार "मनोग्रस्तता अंतर्वेधी (INTRUSIVE) एवं पुनरावर्त्ती चिंतन आवेग एवं प्रतिमाएँ होती है जो मन में बिना बुलाये या स्वैच्छिक रूप में आती है और अनुभव करने वाले व्यक्ति के लिए असंगत एवं अनियंत्रणीय होता है |"

इन परिभाषाओं का विश्लेषण करने से मनोग्रस्तता के स्वरूप के बारे में हमें निम्नांकित तथ्य मिलते है –

(I) मनोग्रस्तता का सम्बन्ध विचार ,चिंतन तथा प्रतिमाओं से होता है |

(II) ऐसे विचार या चिंतन बेतुका एवं अर्थहीन होते है |

(III) ऐसे विचार या चिंतन का स्वरूप पुनरावर्त्ति होता है तथा रोगी के मन में बार-बार आकार उसकी मानसिक शान्ति को भंग करते है |

(IV) चाहकर भी ऐसे विचार या चिंतनो को उत्पन्न न होने देने पर रोगी का कोई नियंत्रण नहीं रहता है |

बाध्यता (COMPULSION) एक तरह का व्यवहारात्मक प्रतिक्रिया है जिसमे रोगी अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी क्रिया को बार-बार करते रहने के लिए बाध्य रहता है | ऐसी क्रियाएँ आवांछित ही नहीं बल्कि अतार्किक एवं असंगत भी होता है | साफ़-सुथरे हाथ को धोने का व्यवहार,ताला ठीक ढंग से लगा रहने पर भी उसे बार –बार झकझोर कर देखना ,सड़क पर खरे होकर आते-जाते गाड़ियों का नम्बर नोट करना ,किसी चीज़ को चुराने की बाध्यता ,आग लगाने की बाध्यता आदि बाध्यता के उदाहरण है |

किस्कर 1985 के अनुसार “मनोग्रस्तता जब कार्य में बदल दिए जाते है,तो बाध्यता कहा जाता है |बाध्यता से ग्रसित लोग एक ही कार्य बार-बार करते है हालांकि

वे यह महसूस करते है की ऐसा करने का कोई अर्थ नहीं है |

डेविडसन एवं नील (1996) ने बाध्यता को इस प्रकार परिभाषित किया है , “बाध्यता एक आवर्त्ती व्यवहार है जिसे व्यक्ति अपनी व्यथा को कम करने के लिए तथा कुछ संकट या विपत्ती को रोकने के ख्याल से करने के लिए बाधित अनुभव करता है |”

उक्त परिभाषाओ के विश्लेषण से बाध्यता के स्वरूप के बारे में निम्नांकित तथ्य प्राप्त होते है –

(I) बाध्यता में व्यक्ति ना चाहते हुए भी एक ही क्रिया को बार-बार दोहराता है |

(II) बाध्यता में व्यक्ति द्वारा की गई क्रियाएं अवांछित ही नहीं बल्कि तार्किक एवं असंगत भी होता है |

बाध्यता में रोगी से जब यह पूछा जाता है की वे क्यों बार-बार एक ही क्रिया को अनावश्यक दोहराते रहते है तो उनका अवाक उत्तर यही होता है की यदि वे ऐसा नहीं करते है तो वे अशांत तथा अप्रीतिकर महसूस करते है |

मनोग्रस्तता के प्रारूप (FORMS OF OBESSION) एस अख्तर एवं अनेक सहयोगियों ने (1975) मनोग्रस्तता के पाँच प्रारूप बतलाये है जो इस प्रकार है-

(1) **मनोग्रस्ति शक (OBSESSIVE DOUBTS)**-इस तरह के विचार का सम्बन्ध कुछ ऐसे पूर्ण कार्य से होता है जिससे ठीक-ठाक ढंग से संपन्न कर लिया जाता है जैसे –कमरे का ताला ठीक ढंग से बंद करने के बाद भी रोगी के मन में यह विचार बार-बार आता है की उसने ताला ठीक ढंग से बंद नहीं किया है |इस तरह का शक करीब पंचानवे प्रतिशत रोगियों में पाया जाता है |

(2) **मनोग्रस्ति चिंतन (OBSESSIVE THINKING)**-इस तरह के सतत चिंतन का सम्बन्ध रोगी के जीवन में भविष्य में घटने वाली घटनाओं से सम्बद्ध होता था जैसे ,एक गर्भवती महिला रोगी को बार-बार यह चिंतन परेशान करता था की बच्चा होने के बाद उसे कहीं दूर नौकरी पर जाना पर सकता है परन्तु यदि बच्चा उसके साथ रहेगा तो ऐसी परिस्थिति में तब वह क्या करेगी ?

(3) **मनोग्रस्ति आवेग (OBSESSIVE INPULSES)**-कुछ रोगियों में कुछ साधारण एवं कुछ क्रियाओं को करने से संबंद्ध तीव्र इच्छाएँ बार-बार आते देखी गयी और रोगियों की संख्या 17% थी |

(4) **मनोग्रस्ति डर (OBSESSIVE FEARS)**-26% रोगियों में यह देखा गया है की वे इस बात से काफी भयभीत एवं डरे हुए रहते थे की वे अपना नियंत्रण कहीं खो कर कुछ

ऐसा कार्य न कर दे जो सामाजिक रूप से लज्जित करने वाला हो |

(5) **मनोग्रस्ति प्रतिमा (OBSESSIVE IMAGE)**-कुछ रोगियों में हाल में देखे गए दृश्य या कल्पना किये गए दृश्यों से सम्बद्ध घटना की प्रतिमाएं मन में सतत आती थी | बाध्यता के प्रारूप (FORMS OF COMPULSIONS) बाध्यता के दो प्रारूप मुख्य रूप से पाए गए –

(I) **अनुवर्ती बाध्यता (ELALING COMPULSION)**-इसमें रोगी कोई क्रिया करने की प्रबल दवाब महसूस करता है |

(II) **नियंत्रण बाध्यता (CONTROLLING** COMPULTION)-इस तरह के बाध्यता में रोगी अपना ध्यान किसी बाधित व्यवहार को नियंत्रित करने के ख्याल से कुछ आवर्त्ती व्यवहार करता है | मेयर्स एवं उनके सहयोगियों (1984) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया है की जीव संख्या के एक से तीन प्रतिशत लोग OCD से प्रभावित होते है | क्रिंगलेन (1970)के अनुसार OCD की शुरुआत आरंभिक व्यस्कावस्था में किसी तनाव पूर्ण घटना जैसे गर्भ ठहरना ,बच्चे का जन्म होना ,पारिवारिक संघर्ष तथा कार्य में विशेष कठिनाई आदि के कारण उत्पन्न होता है |